राष्ट्रपिता महात्मागॉधी का दलितों के प्रति दृष्टिकोण एक दार्शनिक अध्ययन

अभय कुमार सेठ
शोध निर्देशक
प्रो. अखिलेश्वर प्रसाद दुबे
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय
वि.वि. सागर (म.प्र.) 470003
रजि. न. **Y154240063**
Email–abhayipr@gmail.com
मो.न.–7723963145

दलित – विमर्श समकालीन भारतीय समाज, राजनीति, साहित्य एवं दर्शन का एक महत्वपूर्ण विमर्श है। दलित वे लोग जो समाज में मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, राजैनतिक, सांस्कृतिक, रूप से जिसे प्रबुद्ध तथा मजबूत व्यक्तियों द्वारा दबाया, कुचला या उनके ऊपर नियमों को थोपा गया है। लोगों को दलित की सेवा दी गयी है। जैसा कि महात्मा गॉधी जी ने कहॉ था कि कोई भी समाज या राष्ट्र अपने एक अंग को अस्पृश्य या दलित बनाकर अपनी समूचित प्रगति नहीं कर सकता है। अतः दलित दृष्टिकोण न केवल दलितों के सशक्तिकरण एवं उनके विकास हेतु बल्कि पूरे समाज एवं राष्ट्र की प्रगति के लिये भी अपरिहार्य है। मगर आज दलित लोग अपने मूल्य उद्देश्यों से भटक चुके है। स्वयं वे दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सिद्धांन्तों पर खरे नहीं उतरे जिसका फायदा ऊॅची जातियॉ उन्हें जाति मनमुटाव करके उनका फायदा वोट बैंक में बनाती है। ऐसे कई तथाकथित दलितवादी विचारक (जिसमें दलित एवं सर्वण दोनों सामिल है) महात्मागॉधी आदि राष्ट्रनायको द्वारा दलित मुक्ति मे दिये गये योगदानों की अनदेखी करते हुये उन्हें दलित विरोधी करार दे रहे है और उन्हें अपमानजनक विशेषणों से नबाजने में लेगे है। ऐसे में गॉधी जी के दलित–विमर्श को पुनः समग्रता में देखने की जरूरत है। जैसा की हम जानते है कि – ब्राह्मणवाद जिसकी बजह से एक बडी आबादी को अछूत बनाकर पशु से भी बदतर स्थिति में रखा गया था। दलित स्त्री जाति का बाल विवाह, बाल–वैधत्य, वेश्यावृत्ती, देवदासी प्रथा आदि शोषण होता था और उन्हें शिक्षा और समाजिक समानता के अधिकारों से बंचित कर दिया गया था। गुलामी के समय अंग्रेजों ने भी इसका भरपूर लाभ उठाया और सम्राज्यवाद की स्थापना करने में कमयाब हो गये।

उन्होने संस्कृतिकता को नष्ट करने का भरपूर प्रयास किया। उसी प्रकार लार्ड मैकाले ने भी शिक्षा पद्धति मे भारतीय शिक्षा व उसके विचारों को नष्ट करने की कोशिश किया था। जिसका उदाहरण कई वर्षो तक धू–धू कर जलती हुई तक्षशिला नालंदा विश्वविद्यालय की पुस्तकालय की स्थिति का हुआ था। इसके साथ ही भारतीय इतिहास गवाह है कि हमारी संम्पादाओं की लूट–खसोट भी हो रही थी। गॉधीवादी आलोचक डॉ. श्री भगवानदास के अनुसार "एक राष्ट्र के रूप में दलित भारत के मुख्य रूप से चार पक्ष थे–1. अछूतों का दलन, 2. स्त्रीयों का दलन, 3. भाषा शिक्षा के स्तर पर दलन, 4.राजनैतिक दलन इसके अंतर्गत राजनैतिक पराधीनता से लेकर आर्थिक शोषण तक वे मुख्य समस्यायें शामिल थी। अतः राष्ट्रपिता महात्मागॉधी ने दलित मुक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। एक बार की घटना है कि महात्मा गॉधी ने अपनी मॉ श्रीमति पुतली बाई से कहा था कि भंगी से छू जाने से पाप मानना गलत है। फिर अपने दक्षिण अफिका में रहने के दौरान भी उन्होंने कहा कि भारत में एक बडे समूह को अश्पृश्य बनाकर सवर्ण हिन्दुओं ने शोध छात्र, दर्शन विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. सागर (म.प्र.)470003 जो पाप किया है वे उसी का दण्ड दक्षिण अफ्रिका में रंगभेद के रूप में भोग रहें हैं। लेकिन आलोचक गॉधी जी पर आक्षेप उठाते है कि हिन्दू स्वराज्य में, मेरे सपनों का भारत, में गॉधी जी ने क्यों नहीं कही अछूतों के बारे में सोचने का प्रयास किया।" फिर भी महात्मागॉधी ने जगह–जगह पर – हरिजन–सवर्ण–सहभोज आयोजित कराए और अछूतों के मंदिर मे प्रवेश हेतु आन्दोलन चलाया। इस दिशा में उनके द्वारा सप्ताहिक पत्र "हरिजन" और उनकी संस्था "हरिजन सेवाक संघ" के योगदान भी अविस्मरणीय है। साथ ही गॉधी जी के वर्ण व्यवस्था संबंधी विचारों में आये बदलाव और उनके द्वारा अर्न्तजातीय व अर्न्तवर्णीय विवादों की पूरी जोर

सोर से बकालत भी विशेष महत्व रखता है। अश्पृश्यता एक सौ सिर वाला दैत्य है। जो बुद्धि एवं सदाचार का एक विरोधी है। अतः हम सभी भारतीयों को इंसान धर्म मानव अछूत धर्म का विरोध करना चाहिए। क्योंकि ईश्वर अंशजीवअविनाशी कबीर की उक्ति है। सभी ईश्वर के अंश है कोई अछूत नही है। सभी पंचतत्व से मिलकर बने है तथा सभी में चमड़ा, मॉस, रक्त – चमार की उपस्थित है अतः हमे मानव धर्म का पालन करना चाहिए। अतः हमें एक क्रूर, अमानवीय, असहिष्णु एवं आत्मघाती व्यवस्था का विरोध करना चाहिए। मैं यह मानता हूँ कि – अस्पृश्यता का मूल जड धर्म में नही वरन उच्चता के झूठे अहंकार में है। अर्थात अपने दुगुर्णो को अपने पैरों तले दबाकर रखने कर मनोवृत्ति के कारण अस्पृश्ता पैदा हुई है। गॉधी जी के अनुसार हिंन्दू धर्म शास्त्रों में तीन प्रकार के छुआ–छूत का उल्लेख मिलता है।
जम्म से अस्पृश्प।

शूद्र पुरूष।

ब्राह्मण स्त्री के संयोग से पैदा होने वाली संतान।

शास्त्र निषिद्व कार्य करने वाले लोग।

अशुद्ध दशा में रहने वाले लोग।

लेकिन जब गंदा कार्य के बाद आदमी नहा–धोकर स्वच्छ हो जाता है तब उसकी अश्पृश्यता समाप्त हो जाती है। इस प्रकार की अश्पृश्यता न तो जन्मजात होती है और न ही स्थाई होती है। यह हर मानव की स्थिति है। जिस प्रकार शौच करते समय और शवदाह के समय व्यक्ति को अश्पृश्य माना जा सकता है। यह माता–पिता तथा बेटे के बीच भी पाई जाती है। गॉधी जी का मत था यदि रजस्वला माता बीमार हो जाये और हम उसकी सेवा न करे तो यह भी पाप होगा। अतः उस अवस्था में अश्पृश्य की सेवा करना ही मानव धर्म बना जाता है अतः कर्म के साथ पुनः कुछ समय के लिये पूरी दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति अश्पृश्य हो जाता है। परंतु कर्म के बाद स्वच्छ होने पर उसे अश्पृश्य कहना पाप है। डॉक्टरी पेशा, प्रसव की स्थिति में मॉ, मेहतर, नाई, धोबी, चर्मकार आदि कार्य करते समय अश्पृश्य अवश्य हो जाते है। शोध छात्र, दर्शन विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. सागर (म.प्र.) 470003 गॉधी जी का मत था कि स्मृतियॉ और वेदों में जो अश्पृश्यता का उल्लेख है उसका संबंध जन्म से नहीं बाहरी आचरण से है। गॉधी जी कहते थे "यदि किसी दिन मुझे यह पता चले कि वेद, उपनिषद, भगवतगीता, स्मृतियॉ और अन्य शास्त्रों में जन्माधारित अश्पृश्यता का समर्थन है तो दुनिया की कोई ऐसी ताकत नहीं होगी जो मुझे हिन्दू धर्म से बॉधकर रखे, तब मैं हिन्दू धर्म को उसी तरह फेक दूँगा जिस तरह लोग सड़े हुये सेव को फेक देते है" वे लिखते है कि "यदि एक क्षण के लिये भी मुझे यह विश्वास हो जाये कि हिन्दू धर्म मुझसे किसी भी प्राणी को छूने में पाप समझने की आशा करता है तो मुझे हिन्दू कहलाने का हक नहीं रहेगा।" राष्ट्रपिता महात्मागॉधी कहते है कि मैं अश्पृश्यता के कलंक को अपनें मुक्त करने और पाप का प्रायश्चित करने के लिये हरिजन उत्थान में रूचि लेता हूँ। अतः हृदय परिवर्ततन द्वारा इसे दूर किया जा सकता है। स्वराज के लिये अश्पृश्यता निवारण अपर्हाय है और यह न केवल सभी भारतीयों बल्कि पूरी मानवता के हित में है। राष्ट्रपिता महात्मागॉधी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के विचारों में दलित मुक्ति के मुद्दों और विशेषकर मुक्ति के साधनों को लेकर काफी मतभेद है। फिर भी दोनों विचारक मानव–मुक्त संघर्षरत थे। इसी स्पष्टता ने गॉधी जी के सर्वोदय को प्रकट किया–अंतिम व्यक्ति का उदय ही सर्वोदय की परिभाषा को प्रकट करता है। इस प्रकार समग्रता में देखने पर गॉधी अंबेडकर एक दूसरे के प्रति नहीं, पूरक साबित होते है। दर्शनशास्त्र "दर्शनशास्त्र मानव मूल्यों के समग्रता का अध्ययन है।" इस दृष्टिकोण से दर्शनशास्त्र यह बताने का प्रयास करता है कि प्रत्येक मानव का मूल्य उसकी समग्रता (विस्तृत सोच, दृष्टि सबके सार तत्व को समझना है), जिस प्रकार मिट्टी का घडा, मिट्टी के गिलास को छोटा समझकर तो यह अज्ञानता का दोष है। अतः गॉधी जी ने कहा था ईश्वर अल्हा तेरे नाम, सब को सन्मति दे भगवान। हमें ठीक

उसी प्रकार गॉधी जी और आंबेडकर जी के विचारों को पुनः सही तरीके से समझने का प्रयास करना चाहिए। तथा सम्राज्यवाद–ब्राह्मणवाद का विरोध करना चाहिए। अतः मैं यह कहना चाहता हूॅ कि ईश्वर द्वारा बनाई गई कोई वस्तु अछूत नहीं होती है वहा सभी बराबर है वहॉ सब के साथ समाजिक न्याय की स्थापना की गई है। जो कि कर्मो के ऊपर आधारित है। तुलसीदास जी ने भी यह कहा है कि कर्म प्रधान विश्व रचि रखा। जे जस करही ताही फल चाखा। दर्शनशास्त्र की एक किवदन्ती के अनुसार – सुकरात बहुत कुरूप दार्शनिक था किसी ने उसके चहरे पर हँसी उडँया था तो उन्होने कहॉ था कि मोह का हँससी अर्थात मुझपे क्यों हँसते हो उस बनाने बाले पर हँसों। संदर्भ –

1. दलित दस्तक पत्रिका।
2. गॉधीः संपूर्ण गॉधी वाग्यमय सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, 1966 खंड – 33
3. सिंह श्री भगवान, गॉधी और दलित भारत जागरण, पूर्वोक्ता, पृ. 18–19
4. सरहिन्द पत्रिका,